

अरुणाचल प्रदेश में संपर्क भाषा के रूप में हिंदी का महत्त्व

जाइंडको सिंग्फो, अतिथि संकाय, हिन्दी रांग फ्राह शासकीय महाविद्यालय, चांगलांग, अरुणाचल प्रदेश

शोधसार

अरुणाचल प्रदेश भारत के उत्तर-पूर्व में बसा वह राज्य है जहाँ सूरज की पहली किरण सबसे पहले अपना बसेरा डालती है। यह राज्य कुल ८३,३४७ वर्ग कि.मी. में फैला हुआ है। हिमालय की गोद में बसा यह राज्य तीन अन्तराष्ट्रीय सीमाओं से लगा हुआ है। इसके उत्तर में चीन, पश्चिम में भूटान तथा पूर्व में बर्मा है। इस राज्य में 26 मुख्य जनजातियाँ हैं तथा सौ से अधिक उपजनजातियाँ निवास करती हैं। न्यीशी, आदी, गालो, आपातानी, मोनपा, तागीन, शेरदुक्पन, मिश्मी, खामती, सिंगफो, नोक्टे, वांगचु, तंगसा, आका, मिजी, मेम्बा, बुगुन आदि कुछ प्रमुख जनजातियाँ हैं। इन सभी जनजातियों का अलग सामाजिक-सांस्कृतिक ढांचा है तथा अलग – अलग बोलियाँ हैं। ये सभी जनजातियाँ भाषा, पूजा-पद्धति, खान-पान, रहन-सहन आदि रूपों में एक-दूसरे से भिन्न हैं, फिर भी इनमें एक समानता है और वह है – ये सभी शांति के पुजारी हैं। सभी जनजातियों की बोलियों में एकरूपता का अभाव है, इसलिए कोई भी बोली संपर्क भाषा नहीं बन पाई है। इन सभी जनजातियों की भाषा एक-दूसरे से अलग होने के कारण ये सभी एक-दूसरे से संपर्क करने के लिए हिंदी भाषा का ही प्रयोग करते हैं।

बीजशब्द :- अरुणाचल प्रदेश; उत्तर-पूर्व; संपर्क-भाषा; हिन्दी I

प्रस्तावना

भाषा मनुष्य के विचार-विनिमय और भावों की अभिव्यक्ति का साधन है। संपर्क भाषा का आशय जनभाषा है। संपर्क भाषा या जनभाषा वह भाषा होती है जो किसी क्षेत्र, प्रदेश या देश के ऐसे लोगों के बीच पारस्परिक विचार-विनिमय के माध्यम का काम करे जो एक दूसरे की भाषा नहीं जानते। दूसरे शब्दों में विभिन्न भाषा-भाषी वर्गों के बीच सम्प्रेषण के लिए जिस भाषा का प्रयोग किया जाता है, वह संपर्क भाषा कहलाती है। भारत एक बहुभाषी देश है और बहुभाषा – भाषी देश में संपर्क भाषा का विशेष महत्त्व है।

हिंदी की जब हम बात करते हैं तो हिंदी पूरे भारत की लोकप्रिय भाषा है। हिंदी भाषा एक-दूसरे के साथ बातचीत करने के लिए बहुत आसान और सरल माध्यम प्रदान करती है। यह प्रेम, मिलन और सौहार्द की भाषा है। हिंदी विविध भारत को एकता के सूत्र में पिरोने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। पूर्वोत्तर राज्यों में, विशेष रूप से अरुणाचल प्रदेश में हिन्दी बहुत लोकप्रिय भाषा है, इसलिए पूरे अरुणाचल में संपर्क भाषा के

रूप में हिन्दी का ही प्रयोग करते हैं। अरुणाचल की 26 मुख्य जनजातियों की बोलियाँ एक-दूसरे से भिन्न हैं और एक दूसरे की भाषा को समझने में असमर्थ हैं। सभी जनजातियों के रीति-रिवाज, खान-पान, पहनावे और रहन-सहन एक दूसरे से भिन्न हैं। ऐसी स्थिति में संपर्क भाषा ही एक ऐसी कड़ी है जो सभी लोगों को जोड़ने और एक दूसरे के समीप लाने का काम करती है। इन सभी जनजातियों को एक दूसरे से संपर्क करने के लिए किसी एक भाषा को चुनना आवश्यक था और इसी कारण लोगों ने सहज रूप से हिन्दी को अपनाया। हिन्दी सामान्य जनता की भाषा है, इसके लिए लोगों का शिक्षित होना आवश्यक नहीं है। हिन्दी भाषा ने अरुणाचल की विभिन्न जनजातियों को आपस में जोड़ने का कार्य किया है। हिन्दी भाषा के माध्यम से ही लोग अपने विचारों का आदान-प्रदान करते हैं और एक दूसरे की संस्कृति, पूजा-पद्धति, त्योहार, रीति रिवाजों में सम्मिलित होते हैं। आज स्थिति यह है कि अरुणाचल की सभी भीतरी गांवों में हिन्दी बोलने और समझने वाले लोग मिल जाते हैं। हिन्दी इतनी सहज और सरल भाषा है कि गाँव के लोग जो पढ़े - लिखे नहीं हैं फिर भी हिन्दी बोल और समझ लेते हैं। बाज़ार, ऑफिस, स्कूल आदि इन सभी जगहों में लोग एक-दूसरे से संपर्क तथा बात करने के लिए हिन्दी का ही प्रयोग करते हैं।

अरुणाचल प्रदेश के सभी स्कूलों में नर्सरी से लेकर कक्षा दस तक हिन्दी विषय अनिवार्य रूप से पढ़ाई जाती है। यही एक मुख्य कारण है कि अरुणाचल प्रदेश के लोग अच्छी हिन्दी बोलते हैं, पढ़ते हैं और समझते हैं। सभी सरकारी महाविद्यालयों में अन्य विषयों के साथ-साथ हिन्दी विषय को भी डिग्री कोर्स के लिए रखा गया है। इसी कारण प्रत्येक वर्ष अरुणाचल के बच्चों हिन्दी में स्नातक की डिग्री लेकर विभिन्न विश्वविद्यालयों में उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए जाते हैं। बहुत से विद्यार्थी हिन्दी में नेट और पिएचाडी करके आज विभिन्न महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयों में असिस्टेंट प्रोफेसर के रूप में पढ़ा रहे हैं तथा स्कूलों में भी हिन्दी शिक्षक के रूप में कार्यरत हैं। ये अरुणाचल प्रदेश के लिए बहुत गर्व की बात है।

सृजनात्मक लेखन के क्षेत्र में भी हिन्दी की देन बहुमुखी है। अरुणाचल प्रदेश, जिसे भारत की आधी जनता नहीं जानती थी अब धीरे-धीरे लोग जानने लगे हैं। जिस प्रकार नए पौधों में कली आने में देर जरूर लगती है पर एक बार आ जाए तो फूल खिलने में देर नहीं लगती, उसी प्रकार अरुणाचल प्रदेश के नवलेखक अब जाने-माने साहित्यकार बन चुके हैं। डॉ जमुना बिनी, डॉ जोराम यालम, डॉ तारो सिंदिक इन्हें आज कौन नहीं जानता है। इन सभी लोगों को आज परिचय देने की आवश्यकता नहीं है। ये सभी साहित्यकार अरुणाचल प्रदेश के चमकते हुए सितारें हैं, जिन्हें देखकर अरुणाचल की नयी युवा पीढ़ी प्रोत्साहित होकर सृजनात्मक लेखन की ओर आगे बढ़ रही हैं।

निष्कर्ष

अरुणाचल प्रदेश में हिंदी केवल संपर्क भाषा के रूप में ही सिमित नहीं रह गयी है, इसका दायरा काफी आगे बढ़ गया है। जैसा कि हम सभी जानते हैं कि अरुणाचल की सभी भाषाएँ असल में बोलियाँ हैं, इन सभी भाषाओं में लिपि का अभाव है। प्रत्येक भाषा को व्यक्त करने के लिए लिपि की आवश्यकता होती है। अरुणाचल की सभी जनजातीय भाषाओं में उच्चारण तथा तान की समस्या आती है। कहीं तान ऊँची जाती है तो कहीं नीची, इसलिए पहले तान समझकर सही रूप में देवनागरी में लिखा जा सकता है। यह लिपि वैज्ञानिक, व्यवस्थित है और साथ ही जैसा उच्चारण करते हैं वैसा ही लिखने की क्षमता इस लिपि में है। अरुणाचल प्रदेश की सभी जनजातियों की अपनी लोक-संस्कृति है, लोक-कथाएं, लोक-गीत, मुहावरे, लोकोक्ति आदि प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है। ये सभी केवल मौखिक रूप में उपलब्ध होने के कारण लुप्त होने के कगार पर आ पहुंची है, इसलिए इन सभी को संरक्षित करके रखना अति आवश्यक हो गया है। केन्द्रीय सरकार भारतीय भाषाओं को संरक्षित करने तथा पूरे भारत को एक-दूसरे से जोड़ने के लिए महत्वपूर्ण काम कर रही है। केन्द्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के पूर्वोत्तर शिक्षण सामग्री निर्माण विभाग द्वारा अधयेता – कोश एवं लोक साहित्य का निर्माण कार्य किया गया है। भाषा केवल एक समुदाय, एक जनजाति और एक क्षेत्र तक ही सिमित नहीं रहनी चाहिए उसका क्षेत्र विस्तृत होना चाहिए और यह कार्य केवल हिंदी भाषा ही कर सकती है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. तिवारी, डॉ भोलानाथ; भाषा विज्ञान; किताब महल, २२ सरोजनी नायडू मार्ग, इलाहाबाद।
2. नागरी संगम; अंक १४२; अप्रैल-जून २०१४
3. नागरी संगम; अंक १४८; अक्टूबर -दिसम्बर २०१५